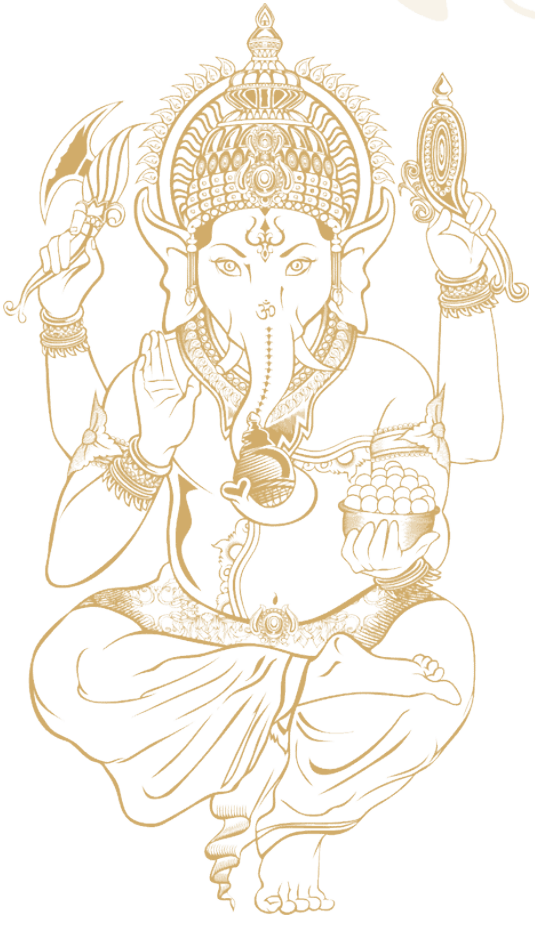

BabyRani

20 Dec 2025

05:11 PM

Ranikhet

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120691701**

तिथि 20/12/2025 **समय** 17:11:00 **वार** शनिवार **स्थान** Ranikhet **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:16
अक्षांश 29:39:00 उत्तर **रेखांश** 79:25:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:12:20 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	22:55:55 घं	गण	राक्षस
वेलान्तर	00:02:24 घं	योनि	श्वान
सूर्योदय	07:02:56 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:17:13 घं	वर्ण	क्षत्रिय
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मूषक
मास	पौष	युँजा	अन्त्य
पक्ष	कृष्ण	हंसक	अग्नि
तिथि	1	जन्म नामाक्षर	भा-भावना
नक्षत्र	मूल	पाया(रा.-न.)	ताम्र-ताम्र
योग	वृद्धि	होरा	सूर्य
करण	किंस्तुघ्न	चौघड़िया	काल

विंशोत्तरी		योगिनी	
केतु 2वर्ष 1मा 30दि		उल्का 1वर्ष 10मा 8दि	
केतु		उल्का	
20/12/2025		20/12/2025	
19/02/2028		29/10/2027	
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		00/00/0000
	00/00/0000		20/12/2025
	20/12/2025	धान्या	30/04/2026
गुरु	13/01/2026	भ्रामरी	29/12/2026
शनि	22/02/2027	भद्रिका	29/10/2027
बुध	19/02/2028		

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:11:00	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			04:37:03	धनु	मूल	2	केतु	चंद्र	मित्र राशि	1.38	पुत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			09:12:26	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	सम राशि	1.14	मातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	09:41:23	धनु	मूल	3	केतु	शनि	मित्र राशि	1.26	भ्रातृ	भ्रातृ	जन्म
बुध			17:19:28	वृश्चि	ज्येष्ठा	1	बुध	बुध	सम राशि	0.86	अमात्य	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु	व		28:33:20	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.26	आत्मा	धन	वध
शुक्र		अ	00:29:41	धनु	मूल	1	केतु	केतु	सम राशि	0.64	कलत्र	कलत्र	जन्म
शनि			01:22:53	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	1.54	ज्ञाति	आयु	वध
राहु	व		17:37:22	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	सूर्य	मित्र राशि		---	ज्ञान	साधक
केतु	व		17:37:22	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	मंगल	शत्रु राशि		---	मोक्ष	सम्पत

लग्न-चलित

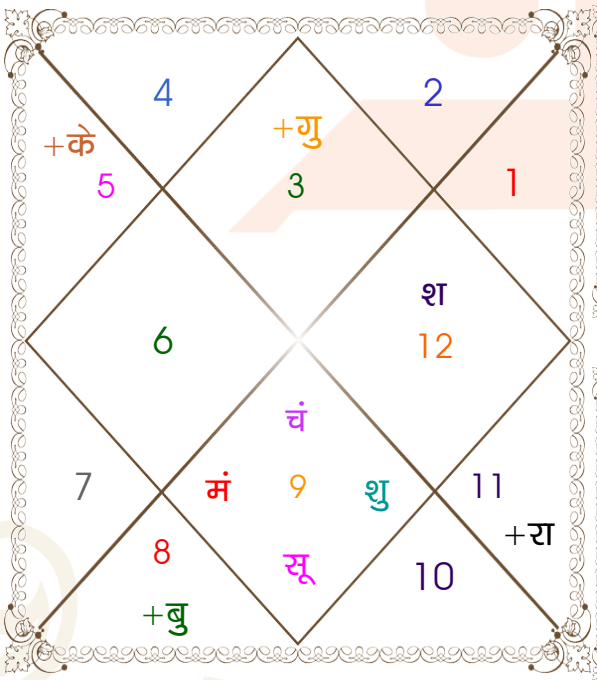

चन्द्र कुंडली

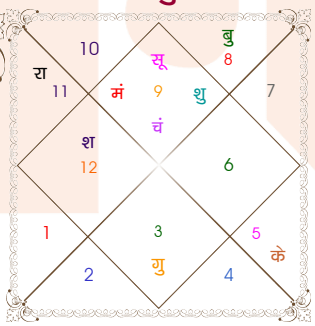

नवमांश कुंडली

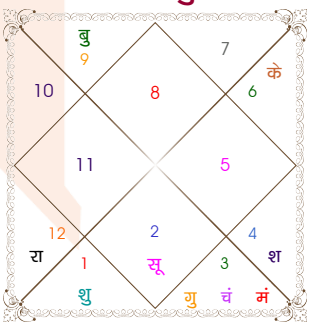

सर्वाष्टकवर्ग

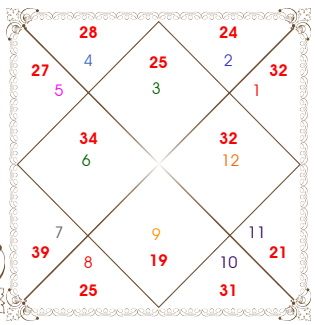

दशमांश कुंडली

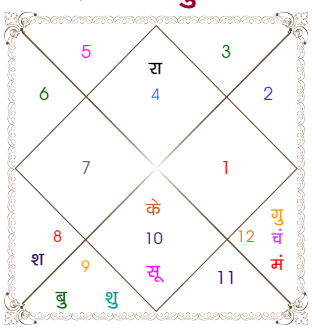

SOMESH KUMAR (VEDIC JYOTISH & VASTU)
OLD TALWARA, NEAR BUS STAND TALWARA,
TEHSIL MUKERIAN,
DISTRICT HOSHIARPUR,
PUNJAB-144216
INDIA

9872505003
kumarsomesh376@gmail.com

नक्षत्रफल

आप मूल नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्म राशि धनु तथा राशि स्वामी वृहस्पति होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि श्वान, वर्ण क्षत्रिय, गण राक्षस, वर्ग मूषक तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "भ" या "भा" अक्षर से होगा यथा- भगवती, भारती आदि।

आप गण्डमूल नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा हुई हैं। इस नक्षत्र के तृतीय चरण में पैदा होने से जातक को सवयं अरिष्ट होता हैं। अतः जन्म समय में इस नक्षत्र की विधि विधान से शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 27 दिन बाद जब यह नक्षत्र पुनः आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। इस प्रकार विधि पूर्वक शान्ति करने से जातक का अरिष्ट दूर होता हैं एवं वह सुखपूर्वक रहता हैं।

मंत्र - ऊं अपाधमयः किल्विषमपकृत्यामपोरय अपामार्गत्वमस्मदपटुः दुश
मानसागरी

आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखों से सुसम्पन्न रहेंगी तथा आनन्द पूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही एक धनवान महिला के रूप में समाज में आप जानी जाएंगी। वाहन सुख से भी आप युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक इसका आनन्द उठायेंगी। शारीरिक स्वास्थ्य भी आपका उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक शक्ति का अभाव नहीं रहेगा। आप स्थिर बुद्धि की होंगी। अतः एकाग्रचित से ही अपने कार्यों को सम्पन्न करने में यत्नशील रहेंगी। आप के शत्रु आपसे नित्य भयातुर रहेंगे तथा कोई भी आपके विरोध करने में सक्षम नही होगा। शास्त्रों के अध्ययन में भी आप रूचिशील रहेगी तथा कई शास्त्रों का आपको अच्छा ज्ञान रहेगा।

सुखेनयुक्तो धनवाहनाढ्यो हिंस्रे बलाढ्यः स्थिरकर्मकर्ता।
प्रतापितारतिजनो मनुष्यो मूलेकृती स्याज्जननं प्रपन्नः।।
जातकाभरण एवं मानसागरी

अर्थात् मूल नक्षत्रोत्पन्न जातक सुख से युक्त, धनाढ्य, वाहन से सुसम्पन्न, हिंसक, बलवान, स्थिरकार्य करने वाला, शत्रु हन्ता और विद्वान होता है।

आपकी वाक्पटुता से सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा इसके कारण आप अपने अधिकाँश कार्यों को सिद्ध करने में सफलता अर्जित करेंगी। आप में अभिमान की भावना भी रहेगी जिसका आप समय समय पर अन्य सामाजिक जनों के समक्ष प्रदर्शन करती रहेंगी।

मूलर्क्षे पटुवाग्विधूर्तकुशलो धूर्तः कृतघ्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक चतुरवाणी से युक्त, अप्रामाणिक, धूर्त, कृतघ्न तथा धनी होता है।

आपको जीवन में धन मान एवं सम्मान का कभी भी अभाव नहीं रहेगा। इनसे आप हमेशा सुसम्पन्न रहकर समाज से पूर्ण आदर प्राप्त करेंगी। आप अपने द्वारा किये गए कार्यों में चपलता का प्रदर्शन नहीं करेंगी अपितु स्थिरता से उन्हे सम्पन्न करेंगी। इसके अतिरिक्त स्थिर धनैश्वर्य का भी आप सर्वदा उपभोग करने में सफल रहेंगी।

मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मूल नक्षत्र में उत्पन्न जातक साहसी, धन और मान से सम्पन्न, स्थिर विचारों तथा ऐश्वर्य का उपभोग करने वाला होता है।

आप ताम्रपाद में उत्पन्न हुई हैं। अतः आप आजीवन धन धान्य से सुसम्पन्न रहेंगी। आप पति के रूप में श्रेष्ठ एवं गुणवान पुरूष को प्राप्त करेंगी। साथ ही कई प्रकार के बहुमूल्य रत्नों एवं धातुओं तथा सोना, चांदी आदि से भी आप सुशोभित रहेंगी। आपका शारीरिक सौन्दर्य सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा तथा स्वास्थ्य भी अच्छा होगा। आप एक विदुषी महिला होंगी तथा विविध प्रकार से चल अचल जायदाद या सम्पति की स्वामिनी बनेंगी। आप विविध प्रकार के भौतिक सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी एवं जीवन में प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग कर सकेंगी। आप की समस्त पुत्र तथा कन्या सन्ततियां सुन्दर एवं गुणवान होंगी एवं जीवन में आप संतति सुख अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इस प्रकार आपका परिवारिक जीवन सुखपूर्वक व्यतीत होगा। आप एक सुशील स्वभाव की महिला होंगी तथा अन्य जनों से आपके हमेशा मधुर व्यवहार रहेगा।

धनु राशि में पैदा होने के कारण आप दीर्घ गले तथा मुख से युक्त होंगी। पैतृक धन से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा आपके अर्न्तमन में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समय समय पर यथाशक्ति आप अपनी इस प्रवृति का पालन करती रहेंगी। लेखन कार्य में भी आपकी स्वाभाविक रूचि रहेगी तथा इसी क्रम में आप कविता सृजन में सफलता प्राप्त कर सकेंगी। आप का शारीरिक बल पूर्ण होगा तथा अन्य लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। आप एक उत्तम वक्ता होंगी तथा अपने ओजस्वी भाषणों के द्वारा जन सामान्य में आपकी ओर आकृष्ट करने में सफल सिद्ध होंगी। नाना प्रकार के कार्यों को करने में भी आप में पूर्ण योग्यता रहेगी तथा चित्रकला में विशेष योग्यता अर्जित कर सकेंगी। आप स्वभाव से गम्भीर होंगी तथा धर्म के प्रति भी निष्ठावान रहकर उसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करेंगी। अपने बन्धुवर्ग से आपके सम्बन्ध सामान्य ही रहेंगे। इसके अतिरिक्त आपको समान व्यवहार या स्नेह के द्वारा ही वशीभूत किया जा

सकेगा बलपूर्वक आप कोई भी कार्य नहीं करेंगी।

व्यादीर्घस्यशिरोधरः पितृधनस्त्यागी कविर्वीर्यवान्।
वक्ता स्थूलदरश्चवाधरनसः कर्मोद्यतः शिल्पवित्।।
कुब्जांसः कुनखी समांसलभुजः प्रागल्भ्यवान धर्मविद।
बन्धुद्विट् न बलात्समेति च वशं साम्नैकसाध्योळश्वजः।।
वृहज्जातकम्

आपकी आखें सुन्दरता से युक्त गोलाकार होंगी तथा हाथ एवं कन्धों की आकृति भी दीर्घ रहेगी। आपका वक्षस्थल भी पूर्ण रूप से विकसित रहेगा। आयु के साथ साथ आपकी कमर में झुकाव भी आ सकता हैं। जल के किनारे निवास करने या भ्रमण करने में आप नित्य तत्पर रहेंगी तथा प्रसन्न चित्त से इन स्थानों में निवास या भ्रमण करेंगी। गूढ़ से गूढ़ विषय के ज्ञान को प्राप्त करने में आप अत्यन्त ही प्रवीण होंगी तथा भय से हमेशा प्रसन्न रहने का प्रयत्न करेंगी। आप अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर उनके प्रति पूर्ण कृतज्ञता के भाव को प्रकट करेंगी तथा हृदय से उनके प्रति आभार भी व्यक्त करेंगी।

कुब्जाङ्गो वृतनेत्रः पृथुहृदयकटिः पीनबाहु प्रवक्ता।
दीर्घासो दीर्घकण्ठो जलतटवसतिः शिल्पविद् गूढगुह्यः।।
शूरोदृष्टोळस्थिसारो विततबहुबलः स्थूलकण्ठोष्ठघोणो।।
बन्धुस्नेही कृतज्ञो धनुषिशशिधरे संहतांघ्रि प्रगल्भः।।
सारावली

आप अपने कार्यों को सिद्ध करने में हमेशा तत्पर रहेगी तथा बिना कार्य के बैठना आपको उचित नहीं लगेगा। आप का वाक्चातुर्य प्रशंसनीय तथा दर्शनीय रहेगा जिससे आपके अधिकाँश कार्य भी सफल होंगे। आप में त्याग की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर आप इसका प्रदर्शन भी करेंगी। आपका कद भी मध्यम रहेगा। साथ ही आप एक साहसी प्रवृति की महिला भी होंगी। शत्रुओं को पराजित करने में आप हमेशा समर्थ होंगी। अतः कोई भी शत्रु आपका विरोध नहीं कर सकेगा। इसके अतिरिक्त धनाढ्य तथा उच्चाधिकार वर्ग में आप आदरणीय रहेंगी तथा इनसे आपके अच्छे संबंध रहेंगे।

दीर्घास्यकण्ठः पृथुकर्णनासः कर्मोद्यतः कुब्जतनुनृपेष्टः।
प्रागल्भ्यवाक्त्यागयुतोळरिहन्ता साम्नैकसाध्योळश्विभवो बलाढ्यः।।
फलदीपिका

आप नाना प्रकार की कलाओं को जानने वाली होंगी तथा सुशीलता का गुण भी आप में विद्यमान रहेगा। आप एक निर्मल चरित्र वाली महिला होंगी तथा स्पष्ट वक्ता के रूप में समाज में प्रसिद्ध रहेंगी। इसके साथ ही व्यय आप अत्यन्त सी सोचविचार कर एवं आय को मध्यनजर रखते हुए ही करेंगी।

बहुकलाकुशलः प्रबलो महाविमलताकलितः सरलोक्तिभाक्।

शशधरे तु धनुर्धरगे नरो धनकरो न करोति बहुव्ययम्।।
जातकाभरणम्

आपके शरीर के अधिकाँश अंग पुष्ट एवं सुडौलता से सुशोभित रहेंगे। आप अपने कुल या परिवार में श्रेष्ठता को प्राप्त करेंगी। समस्त परिवारिक लोग आपको उचित स्नेह तथा सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ ही चित्रकारी या इंजीनियरिंग आदि के क्षेत्र में आप विशेष रूप से सफल हो सकेंगी।

सौम्याङ्गो रूचिरेक्षणः कुलवरः शिल्पी धनुस्थे विधौ।।
जातक परिजातः

आप निडर तथा बहादुर महिला होंगी तथा सत्यानुपालन में सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी बुद्धि भी स्थिर रहेगी तथा स्थिर कर्मों को ही सम्पन्न करने में आप विशेष रूचिशील रहेंगी। अन्य जनों के प्रति आप के मन में हमेशा प्रेम की भावना रहेगी तथा किसी के प्रति द्वेष की भावना अपने मन में नहीं रखेंगी। आप एक बुद्धिमान तथा गुणवान पुरूष की पत्नी होंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे अन्य जन आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। परन्तु आपका शरीर थोड़ी मात्रा में स्थूलता को प्राप्त रहेगा। समाज में आप सभी वर्गों में प्रिय रहेंगी।

शूरः सत्यधियायुक्तः सात्विको जननन्दनः।
शिल्पविज्ञान सम्पन्नो धनाढ्यो दिव्यभार्यकः।।
मानसागरी

आप कई प्रकार के सद्गुणों से युक्त रहकर समाज में सम्माननीया होंगी। देवता, ब्राहमण तथा गुरूजनों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा समय समय पर आप इनके प्रति सम्मान तथा सेवा की भावना का भी परिचय देती रहेंगी। आपकी चाल भी अत्यन्त आकर्षक होगी परन्तु सहन शीलता के भाव का आप में प्रायः अभाव ही रहेगा जिससे कभी कभी आप अनावश्यक दुःखों की अनुभूति करेंगी।

धनुरिवगुणयुक्तः कीर्तिवाक् पूजनीयः।
कुलपतिरूपचेता बन्धुवर्गैक पात्रः।।
बहुजन धनयुक्तो देवविप्रर्षि सेवी।
मृदुगतिरसहिष्णुः कार्मुको यस्य राशिः।।
जातक दीपिका

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपका स्वभाव कभी कभी अधिक बातों को बोलने वाला रहेगा तथा हृदय में भी कोमलता की न्यूनता रहेगी। परन्तु आपकी प्रवृति स्वभाव से ही साहसी रहेगी। अतः साहस से आपके कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। आप शीघ्र ही अकारण कभी कभी अपनी क्रोधी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगी। साथ ही अपने कार्य को पूर्ण करने के लिए भी नित्य प्रयत्नशील रेंगी। आपका अन्य जनों से विवाद तथा भी प्रायः चलता रहेगा। परन्तु शारीरिक शक्ति का भी आप में अभाव नहीं होगा तथा शारीरिक

स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा।

जीवन में यदा कदा आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से व्याकुलता की भी अनुभूति कर सकती हैं। साथ शारीरिक सौन्दर्य का आकर्षण भी आपका मध्यम रहेगा परन्तु आपकी वाणी कभी कभी कठोर होगी जिससे सुनकर श्रोता अत्यन्त ही अप्रसन्न होंगे। अतः प्रयत्नपूर्वक अपने सम्भाषण में मधुर शब्दों का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगडू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

श्वान योनि में जन्म होने के कारण आप प्रायः अपने उद्यम को करने में ही अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगी। आपकी प्रवृति अत्यन्त ही उत्साह से परिपूर्ण रहेगी फलतः कार्य सिद्धि करने में आपको विशेष कठिनाई नहीं होगी। आप एक साहसी महिला भी होंगी तथा साहस पूर्वक अपनी सांसारिक समस्याओं का समाधान करेंगी। माता पिता के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा तथा निःस्वार्थ रूप से आप आजीवन उनकी सेवा करती रहेंगी।

सोद्यमः सुमहोत्साही शूरः स्वज्ञाति विग्रही।
मातृपित्रो सदाभक्तः श्वानयोनौसमुद्भवः।।
मानसागरी

अर्थात् श्वान योनि में उत्पन्न जातक उद्यमी, उत्साह से परिपूर्ण, शूरवीर, अपने बन्धुवर्ग से द्वेष रखने वाला तथा माता पिता का भक्त होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा सप्तम भाव में स्थित है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में प्यार एवं स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा युक्त रहेंगी एवं जीवन में आपको अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी शादी करने में भी उनका विशेष सहयोग रहेगा तथा आपको व्यापारादि कार्यों में भी पूर्ण आर्थिक या अन्य रूप से सहयोग तथा प्रोत्साहन देंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धालु रहेंगी एवं हमेशा उनका हार्दिक सम्मान करेंगी। उनकी बातों से आप प्रायः सहमत रहेंगी तथा उसका पालन करने के लिए भी तत्पर रहेंगी। आपके मध्य कभी कभी सैद्धान्तिक मतभेदों की भी उत्पत्ति होगी जिसके कारण कभी कभी अप्रिय स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। परन्तु कुल मिलाकर आपसी संबंध अच्छे रहेंगे तथा एक दूसरें का सहयोग करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति सप्तम भाव में है अतः पिता की आप प्रिय

रहेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके शुभ प्रभाव से धनलाभ प्राप्त करने में वे सफल होंगे तथा जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता एवं सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपके विवाह कराने में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही आप उनकी विश्वास पात्र भी होंगी।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी तथा उनकी आज्ञा पालन में भी नित्य रूचिशील रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा कुछ सैद्धान्तिक मतभेद भी होंगे जिससे सम्बन्धों में क्षणिक तनाव एवं कटुता उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समयोपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उनकी सहायता करने के लिए भी तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्ट नहीं होने देंगी।

आपके जन्म समय में मंगल सप्तम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करेंगे। आप उनकी प्रिय रहेंगी तथा आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आप पूर्ण रूपेण सहयोग प्राप्त करेंगी एवं आपकी विवाह सम्पन्न कराने में भी उनका मुख्य योगदान रहेगा। साथ ही व्यापार संबंधी कार्यों एवं सुख दुःख में वे आपको अपनी ओर से पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करते रहेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं विश्वास रहेगा एवं उनके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपका सहयोग रहेगा। साथ ही विषम परिस्थितियों में भी आप उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहायता प्रदान करेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण इसमें कटुता भी आएगी लेकिन यह अस्थायी होगी तथा शीघ्र संबंध सामान्य हो जाएंगे।

आपके लिए श्रावण मास, तृतीया, अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फल दायक हैं। अतः आप 15 जुलाई से 14 अगस्त के मध्य भरणी नक्षत्र, वज्रयोग, तैतिलकरण तथा 3,8, 13 तिथियों में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रय विक्रय आदि अन्य शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति विशेष सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव हनुमान जी की उपासना करनी चाहिए तथा मंगलवार एवं वृहस्पतिवार के उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, पुखराज, पीत वस्त्र, पीत चन्दन, चने की दाल, हल्दी इत्यादि पदार्थो का दात्र करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त वृहस्पति के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 16000 जप या

किसी योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे शुभ फलों में वृद्धि होकर अन्यत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ ग्रां ग्रीं ग्रों सः वृस्पतये नमः।
मंत्र- ॐ ऐं क्लीं वृहस्पतये नमः।

SOMESH KUMAR (VEDIC JYOTISH & VASTU)
OLD TALWARA, NEAR BUS STAND TALWARA,
TEHSIL MUKERIAN,
DISTRICT HOSHIARPUR,
PUNJAB-144216
INDIA

9872505003
kumarsomesh376@gmail.com